ध्येयIAS®
most trusted since 2003

अप्रैल | 2024

ग्रामीण विकास को समृद्ध करता पर्यटन

परीक्षोपयोगी सारगर्भित नोट्स

सरल व बोधगम्य भाषाशैली का उपयोग

डायग्राम, टेबल व चित्रों का तार्किक उपयोग

ध्येय IAS
कुरुक्षेत्र ज़िस्ट

ग्रामीण भारत में बहुआयामी विकास का उत्प्रेरक ग्रामीण पर्यटन

भारत में ग्रामीण पर्यटन आर्थिक विकास और सामुदायिक सशक्तीकरण के उत्प्रेरक के रूप में उभर रहा है। सरकारी पहल, प्रतियोगिताएं और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता जैसे यूएनडब्ल्यूटीओ पुरस्कार पोचमपल्ली और घोडों जैसे सफल मॉडलों पर प्रकाश डालते हैं। वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यापक विकास पर केंद्रित है और क्षमता निर्माण प्रयासों का उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन को सतत बनाए रखते हुए, स्थानीय समुदायों के कल्याण के लिए सहयोग और लचीलेपन को बढ़ावा देना है।

- **परिचय**

  'ग्रामीण पर्यटन' वह पर्यटन है जो ग्रामीण इलाकों या ग्रामीण क्षेत्र में होता है। वैश्विक स्तर पर ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में हुई, जब शहरों में औद्योगीकरण के तेजी से विस्तार के परिणामस्वरूप ग्रामीण इलाकों ने पर्यटकों को आकर्षित करना शुरू कर दिया।
- 1980 में'**आवर कॉमन फ्यूचर'** पर रिपोर्ट और 2000 में **सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों** को अपनाने के बाद से ग्रामीण पर्यटन को विकसित और विकासशील देशों द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान और विकास के एक उपकरण के रूप में देखा गया है।
- भारत में ग्रामीण पर्यटन अभी भी शुरुआती चरण में है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने, रोजगार के अवसर पैदा करने और आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने में ग्रामीण पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- भारत के गाँव देश की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं, शिल्प, विरासत और कृषि पद्धतियों के भंडार के रूप में काम करते हैं।
- इसके अलावा, यह ग्रामीण क्षेत्रों से संकटपूर्ण प्रवासन को कम करने, गरीबी घटाने और सतत विकास को बढ़ावा देने में योगदान देता है।

क्षमता का एहसास

- भारत में ग्रामीण पर्यटन का पहला उल्लेख दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007) में देखा जा सकता है। हालाँकि इन क्षेत्रों में ढांचागत विकास कर पर्यटन के नए रूप 'ग्रामीण पर्यटन' को पहली बार प्राथमिकता ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) के माध्यम से दी गई।
- बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) में भारत सरकार चिकित्सा पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन जैसे पर्यटन के विशिष्ट क्षेत्रों के विकास के लिए अवसरों को अपनाने और रास्ते खोलने की कोशिश करती है।

पर्यटन के विकास के लिए रणनीति

- भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने भारत में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए दो रणनीतियाँ तैयार की है।
- भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप और भारत में ग्रामीण होमस्टे को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रणनीति।

- दोनों रणनीतियाँ भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का लाभ उठाने के व्यापक दृष्टिकोण के साथ तैयार की गई हैं। रणनीतियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान के साथ-साथ ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

सामुदायिक सशक्तीकरण एवं गरीबी उन्मूलन के लिए ग्रामीण पर्यटन

विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं (जी-20) ने ग्रामीण पर्यटन पर विशेष ध्यान देने के साथ कच्छ के रण में पहली पर्यटन कार्यसमूह की बैठकआयोजित की। पहली टीडब्ल्यूजी बैठक का पहला पक्ष गरीबी उन्मूलन हेतु सामुदायिक सशक्तीकरण के लिए ग्रामीण पर्यटन पर आधारित था।

भारतीय ग्रामीण पर्यटन को सूचीबद्ध करना

- भारत एक ऐसी भूमि है जिसमें ग्रामीण पर्यटन की अनगिनत संभावनाएं हैं। भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का पता लगाने के लिए सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता और सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण होमस्टे प्रतियोगिता शुरू की गई है।
- सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता के पहले संस्करण में, 31 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 315 जिलों से कुल 795 गाँवों ने आवेदन दायर किए थे, जिनमें से 35 गाँवों को भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँवों के रूप में मान्यता दी गई थी।

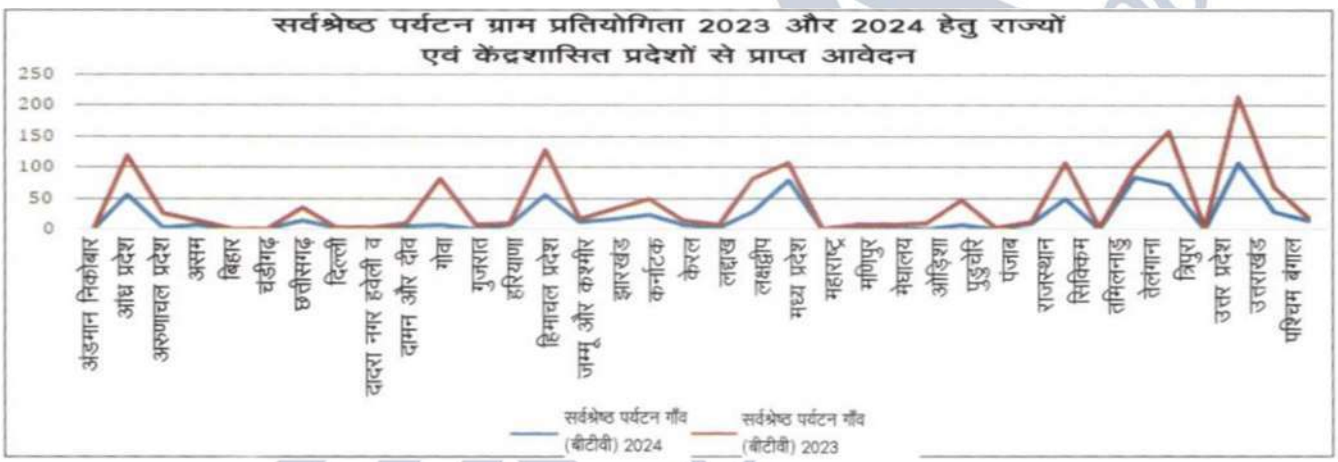

- सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता के वर्तमान संस्करण सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता 2024 हेतु कुल 991 आवेदन और सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण होमस्टे प्रतियोगिता 2024 के लिए 802 आवेदन प्राप्त हुए हैं।
- ग्रामीण पर्यटन स्थलों की पहचान करने और दुनिया को भारतीय ग्रामीण पर्यटन के बारे में जागरूक करने की ग्रामीण पर्यटन के लिए एक समर्पित वेबसाइट (www.rural.tourism.gov.in) लॉन्च की गई है।

ग्रामीण पर्यटन को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना

- ग्रामीण पर्यटन विकास को संयुक्त राष्ट्र पर्यटन (पहले यूएनडब्ल्यूटीओ) से प्राप्त अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा से बल मिला है। तेलंगाना राज्य के **पोचमपल्ली गाँव** को वर्ष 2021 में और वर्ष 2023 में गुजरात राज्य के धोर्डो को यूएनडब्ल्यूटीओ सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता दी गई
- **खोनोमा, नगालैंड** और **मडला, मध्य प्रदेश** को यूएनडब्ल्यूटीओ के उन्नयन कार्यक्रम के तहत पहचान मिली थी। इन गाँवों को क्रमशः वर्ष 2022 और 2023 में पहचान मिली थी।

आखिरी गाँव से पहले गाँव तक

- भारत का तथाकथित आखिरी गाँव, आखिरी गाँव नहीं बल्कि भारत का पहला गाँव है। इसी दृष्टि से भारत सरकार द्वारा देश के सीमावर्ती गाँवों के लिए वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम शुरू किया गया।
- इसके अंतर्गत भारत सरकार ने सीमावर्ती समुदायों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने, बुनियादी ढांचे को उन्नत करने, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कई विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं।

सामुदायिक सुदृढीकरण

- भारत सरकार ग्रामीण पर्यटन की क्षमता को समझती है और राष्ट्रीय, राज्य और क्लस्टर स्तरों पर क्षमता निर्माण संसाधन केंद्र स्थापित करके इसे मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। ये केंद्र हितधारकों के लिए एक मंच प्रदान करेंगे, ज्ञान साझा करने में सुविधा प्रदान करेंगे और विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा देंगे।

निष्कर्ष

इन पहलों के माध्यम से, भारत सरकार ग्रामीण पर्यटन को एक स्थायी और समावेशी विकास रणनीति के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रही है। यह ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने, आजीविका के अवसर पैदा करने और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करेगा।

पर्यटन को पुनः परिभाषित करते पूर्वोत्तर भारत के त्यौहार, भोजन और संगीत

परिचय

- पूर्वोत्तर क्षेत्र पृथक मानव जातियों से सम्बद्ध 200 से अधिक विविध जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों का घर है। इस वजह से इस क्षेत्र को अक्सर 'मानव विज्ञानियों का स्वर्ग' के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- पूर्वोत्तर विविध जातियों, संस्कृतियों और परम्पराओं का केंद्र और मिलन बिंदु भी है। यह विविधता असंख्य त्यौहारों में सर्वोत्तम रूप से परिलक्षित होती है जो विभिन्न जातीय समुदायों द्वारा वर्ष के विभिन्न भागों में मनाए जाते हैं। लगभग सभी जातीय समुदाय पुरातन समय से मुख्य रूप से कृषि में लगे हुए हैं।
- एक समय था जब इस क्षेत्र में पर्यटकों का आना- जाना ज़्यादातर असम में कामाख्या मंदिर और काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, मेघालय में शिलांग और चेरापूंजी, अरुणाचल प्रदेश में तवांग और मणिपुर में लोकटक झील जैसे कुछ स्थानों तक ही सीमित रहा।
- लेकिन समय बीतने और सुरक्षा परिदृश्य में महत्वपूर्ण सुधार के बाद इस क्षेत्र ने अपनी पर्यटन क्षमता को फिर से परिभाषित करना शुरू कर दिया है ।

पूर्वोत्तर भारत के जीवंत त्यौहार और सांस्कृतिक विविधता

- रंगोली उत्सव, असम : असम के संगीत नृत्य, शिल्प और जातीय परंपरा को प्रोत्साहन देने के लिए मनाया जाता है।
- चैरी खिलने का त्यौहार, मेघालय : शरद ऋतु में खिलने वाली चैरी का फूल पर्यटकों को आधुनिक और परंपरागत अनुभव प्रदान करता है।
- शिरुई लिली उत्सव, मणिपुर : मणिपुर के राज्य फूल 'लिली' का उत्सव विविध सामुदायिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है।

जातीय त्यौहार

पूर्वोत्तर के प्रत्येक जातीय समुदाय के ऐसे त्यौहार भी हैं जो पिछले कुछ दशकों में अलग दिखने या बदलाव लाने में सक्षम हैं, निश्चित रूप से उनमें असम का रोंगाली बिहू त्यौहार, मिज्जोस का चपचार कुट त्यौहार, और मेघालय के जीरोस का वांगला या सौ ड्रम उत्सव शामिल है।

असम

- **रोंगाली बिहू**- नए साल का त्यौहार क्षेत्र के सभी जातीय त्यौहारों में अभी भी सबसे बड़ा आकर्षण बना हुआ है। रोंगाली बिहू का आनंद गुवाहाटी, जोरहाट, डिब्रूगढ़, शिवसागर और तेजपुर के आसपास के गाँवों में सबसे ज़्यादा लिया जाता है। हाल के दशकों में पूर्वोत्तर में एक नया चलन देखने को मिला है। यहाँ पारंपरिक नृत्य, संगीत और व्यंजनों पर केंद्रित पर्यटन उत्सवों का आयोजन किया जाने लगा है।
- **चंदुबी महोत्सव-** ऐसा ही एक त्यौहार है, जो जनवरी के पहले सप्ताह में सुरम्य चंदुबी झील के किनारे, 50 किमी. गुवाहाटी के पश्चिम में आयोजित किया जाता है। यह विशेष रूप से राभा जनजाति के संगीत, नृत्य और व्यंजनों को प्रदर्शित करता है, जिसका फरकांति नृत्य सबसे रंगारंग नृत्य है।
- **जॉन-बील मेला-**मेघालय की पहाड़ियों के खासी और असम के मैदानी इलाकों के तिवस के बीच वस्तु- विनिमय उत्सव के रूप में समय से आयोजित किया जाने वाला यह त्यौहार पिछले दो दशकों में एक पर्यटक आकर्षण के रूप में उभरा है।
- **असम का कार्बी समुदाय** था जिसने सबसे पहले अपनी संस्कृति नृत्य, संगीत और भोजन की संभावित पर्यटन गतिविधि के रूप में पहचान की थी और ठीक पचास साल पहले कार्बी युवा महोत्सव का आयोजन शुरू किया गया।

नगालैंड

- **'हॉर्नबिल महोत्सव' :** इसे वर्ष 2000 में नगालैंड में शुरू किया गया जिसमें राज्य की सभी सत्रह प्रमुख जनजातियों को कवर किया गया हजाई। हॉर्नबिल महोत्सव आज सैकड़ों विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

मिजोरम

- **चपचर कुट-** वसंत उत्सव पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पारंपरिक गाँव के मैदान से बाहर राज्य की राजधानी आइजोल में लाया गया जो छोटी पहाड़ी के इस राज्य का सबसे बड़ा उत्सव बन गया है।चेरौ या बांस नृत्य, जो युवक-युवतियों की दर्जनों टोलियों द्वारा खुआंग (ड्रम), दार, दारबू, दारमंग (विभिन्न प्रकार के घंटे) और सेकी (मिथुन हॉर्न) की थाप पर बांस के कई डंडों की ताली के बीच एक ताल में किया जाता है, से पर्यटक विशेष रूप से रोमांचित होते हैं।
- **मिम कुट-** इसमें (मक्का उत्सव) का आनंद लेते हैं जबकि दिसंबर में आने वाले लोग पावल कुट (फसल त्यौहार) का आनंद ले सकते हैं।

नगालैंड

पूर्वोत्तर विविध जातियों, संस्कृतियां और परम्पराओं का केंद्र और मिलन बिंदु भी है। यह विविधता असंख्य त्यौहारों में सर्वोत्तम रूप से परिलक्षित होती है जो विभिन्न जातीय समुदायों द्वारा वर्ष के विभिन्न भागों में मनाए जाते हैं। इस प्रकार, जब पूर्वोत्तर संस्कृति की बात आती है, तो यह क्षेत्र एक विस्तृत कैनवॉस प्रस्तुत करता है जिसमें असंख्य त्यौहार, व्यंजनों की एक विस्तृत श्रृंखला और निश्चित रूप से संगीत, हथकरघा और हस्तशिल्प शामिल हैं।

- **सेक्रेनी और मोत्सु त्यौहार:** फरवरी में आयोजित होने वाला सेक्रेनी अंगामी समुदाय का, जो कोहिमा और उसके आसपास रहते है, दस दिवसीय उत्सव है जो युद्ध पर जाने से पहले शुद्धिकरण और पवित्रीकरण का प्रतीक है, दूसरी ओर मोत्सु मई के प्रथम सप्ताह में मोकोकचुंग जिले में एओ समुदाय द्वारा मनाया जाता है।

मेघालय

- **शिलांग (पूर्व का स्कॉटलैंड) और चेरापूंजी तथा मावसिनराम (पृथ्वी पर दो सबसे आर्द्र स्थान)** में हर गुजरते साल के साथ भीड़ बढ़ती जा रही है। हाल के दिनों में स्थानीय उद्यमियों ने कुछ अन्य पर्यटन उत्पाद लॉन्च किए हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण **मावफ्लांग सेक्रेड ग्रोव्स** है जिसे वहां के पेड़ों के औषधीय महत्व के कारण स्वदेशी समुदाय पवित्र और दिव्य मानते हैं। शिलांग को भारत की रॉक राजधानी होने का गौरव भी प्राप्त है।
- **ब्लॉसम फेस्टिवल :** युवा पर्यटक आजकल नवंबर में शिलांग में आयोजित होने वाले चेरी ब्लॉसम फेस्टिवल का भी इंतजार करते हैं, जो स्थानीय स्तर पर बने सर्वश्रेष्ठ गिटार और अन्य स्ट्रिंग वाद्ययंत्रों के

अरुणाचल प्रदेश

- अरुणाचल प्रदेश की अपातानी घाटी में जिरो म्यूजिक फेस्टिवल (Ziro Music Festival) का विशेष महत्व है। **निष्कर्ष**
- पूर्वोत्तर भारत उन पर्यटकों के लिए एक आदर्श गंतव्य है जो न केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेना चाहते हैं, बल्कि इसकी समृद्ध संस्कृति का भी अनुभव करना चाहते हैं। खाद्य उत्सव और होमस्टे पर्यटकों को क्षेत्र के विभिन्न व्यंजनों का स्वाद लेने, स्थानीय लोगों से जुड़ने और इसकी अनूठी संस्कृति का अनुभव करने का एक शानदार तरीका प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक पर्यटन के लिए ग्रामीण भारत का सुविधा-संपन्न होना जरुरी

परिचय

- भारत में पर्यटन की वास्तविक संभावना ग्रामीण क्षेत्रों में निहित है। ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा खुले क्षेत्रों, छोटी- छोटी बस्तियों, खेतों, प्रकृति की प्रचुरता और लोक संस्कृति से जोड़ती है और यहीं भारत में पर्यटन की संभावनाएं मौजूद हैं।
- भारत **विविधतापूर्ण प्राकृतिक अनुभवों** का खजाना है। शहरीकरण पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हमें इन अनुभवों को **संजोना** और **बढ़ावा** देना चाहिए।
- अगर गाँवों में शहरीकरण का अनुकरण कर उन्हें वास्तविक प्रकृति के अनुभव से वंचित कर दिया जाए तो ऐसा क्लोन किया गया भारत निश्चित रूप से पर्यटकों का पसंदीदा पर्यटन स्थल नहीं हो सकता।
- कृत्रिम हस्तक्षेप से बनाए गए फव्वारे, डिस्को लाइट्स आदि का प्रकृति के बीच सैर जैसी सरल चीज से कोई मुकाबला नहीं हो सकता।
- ग्रामीण भारत में पर्यटन आर्थिक वरदान है जिसे अभी भी विकसित किया जाना है।

ग्रामीण पर्यटन के महत्व के बावजूद ग्रामीण समुदायों द्वारा अभी भी इसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। ग्रामीण समुदाय में ग्रामीण पर्यटन को लेकर उद्यमिता की दृष्टि से और पर्यटकों के आगमन की संभावनाओं को लेकर संशय बना हुआ है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ अभी भी हमारे देश में, उन देशों की तुलना में जहां ग्रामीण पर्यटन एक स्थापित विकल्प है, अप्रयुक्त हैं। भारतीय गाँवों में सक्षम सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता को मान्यता नहीं दी गई है, जो पर्यटकों की घटती रुचि का कारण है। एक सक्षम वातावरण बनाने की प्रक्रिया को, जिसे अब तक 'सुविधाकरण' के रूप में संदर्भित किया जाता है, मात्र नीतिगत हस्क्षेप न होकर एक बहुहितधारक जुड़ाव है।

ग्रामीण पर्यटन और होम स्टे

- ग्रामीण भारत के पास न केवल घरेलू और शहरी, बल्कि विदेशी पर्यटकों को ऑफर करने के लिए भी अनूठा अनुभव है।
- **भारत में होम स्टे:** भारत में होम स्टे की अवधारणा काफी समय से मौजूद है लेकिन इसके बावजूद, यह अभी भी उस तरीके से नहीं बढ़ पाया है जिससे विस्तार की संभावना बन सके।
- इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से एक प्रमुख कारण है व्यापक पैकेजिंग की कमी।
- आकर्षक पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए, होम स्टे व्यवसायों में अक्सर कौशल का अभाव होता है। चाहे वह आवास रखरखाव, स्वच्छता, गुणवत्तापूर्ण सेवा, या स्थानीय परिवहन तक आसान पहुंच हो, एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है।
- इसके अलावा, सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों और लैंगिक भूमिकाओं की जटिलताओं पर भी ध्यान देना होगा। ग्रामीण पर्यटन योजनाओं की सफलता के लिए समुदाय की भागीदारी महत्वपूर्ण है।
- यह ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है कि अधिकांश होम स्टे उद्यमी निम्न और मध्यम आय वर्ग से आते हैं। उन्हें रणनीतिक हस्तक्षेप, मार्गदर्शन और मदद की आवश्यकता होती है ताकि वे सतत सूक्ष्म उद्यमिता पर्यटन व्यवसाय मॉडल विकसित कर सकें।

ग्रामीण पर्यटन

विश्व पर्यटन संगठन (यूएनटूओ) के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन को कम जनसंख्या घनत्व, कृषि और वानिकी आधारित भूमि उपयोग और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और जीवन शैली वाले क्षेत्रों की विशेषता है। भारत में, ग्रामीण पर्यटन **आकांक्षी ग्रामीण क्षेत्रों** में **सतत विकास** को बढ़ावा देने, **सांस्कृतिक पहचान** और **सामाजिक मूल्यों** का संरक्षण करने और **शहरी प्रवासन** को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन के लाभ:

- आर्थिक विकास: ग्रामीण पर्यटन रोजगार के अवसर पैदा करता है, स्थानीय उद्यमों को बढ़ावा देता है और आर्थिक विकास में योगदान देता है।
- सामाजिक विकास: यह गरीबी कम करने, समानता को बढ़ावा देने और समुदायों को सशक्त बनाने में मदद करता है।
- पर्यावरण संरक्षण: ग्रामीण पर्यटन पर्यावरण संरक्षण और स्थायी विकास को प्रोत्साहित करता है।
- सांस्कृतिक संरक्षण: यह स्थानीय संस्कृति और पारंपरिक कलाओं को संरक्षित करने में मदद करता है।

भूटान का उदाहरण:

भूटान **समुदाय-आधारित पर्यटन** का एक सफल मॉडल प्रस्तुत करता है, जहां **ग्राम पर्यटन** स्थानीय जीवनशैली का अनुभव प्रदान करता है। यह **आर्थिक लाभ** प्रदान करता है, **स्थानीय उत्पादों** की बिक्री को बढ़ावा देता है और **ग्रामीण समुदायों** को सशक्त बनाता है।

नवोन्मेषी ग्रामीण पर्यटन: अनुभवों का खजाना

नवीनतम पर्यटन उद्यमी **अनोखे अनुभव** प्रदान करने के लिए **ग्रामीण पर्यटन** में क्रांति ला रहे हैं। एक अन्य नवाचार में **'स्वयंसेवी पर्यटन'** भी ग्रामीण पर्यटन का एक महत्वपूर्ण रूप है जिसमें पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करते हैं और गाँव में अपने प्रवास का आनंद लेते हैं।

कल्पना कीजिए:

- खेतों में काम करना: ताजी हवा में, आप मिट्टी को महसूस करते हुए, फसलों की कटाई करते हैं और पारंपरिक व्यंजन बनाते हैं।
- गाँव के स्वाद: खेत से ताज़ी सब्जियां इकट्ठा करें और स्थानीय रसोई में पारंपरिक भोजन पकाएं।
- गाँव का जीवन: मवेशियों से दूध निकालें, खेतों में काम करें और ग्रामीण जीवन का अनुभव करें।
- प्रकृति के साथ घुलना: गाँवों में प्रकृति की सैर करें, पक्षियों को सुनें और ताज़ी हवा का आनंद लें।

पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए रामबाण

- ग्रामीण पर्यटन शायद प्रकृति में रची-बसी जीवनशैली की सततता के अनुभवात्मक प्रचार का सबसे अच्छा तरीका है।
- जीवनशैली में बदलाव सबसे महत्वपूर्ण पहलू है बशर्ते संसाधनों पर भावी पीढ़ियों के अधिकारों का उल्लंघन न हो। ग्रामीण आबादी के मन को अनावश्यक शहरी चीजों को अपनाने से बचना चाहिए। पारंपरिक LIFE (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) सिद्धांतों में गर्व की भावना पैदा करना दृढ़ विश्वास और शाश्वतता सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा माध्यम है।
- दुबई में आयोजित कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टीज के 28वें सम्मेलन में कहा गया की 2100 तक हिमालय का 75% भाग अपना हिम आवरण खो देगा। भारत में हिमालय क्षेत्र देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 12.56% है।
- ग्रामीण पर्यटन को नेशनल मिशन फॉर सस्टेनिंग द हिमालयन इकोसिस्टम (NMSHE) नीति के साथ एकीकृत करना आवश्यक है।
- भारत द्वारा सीओपी 28 में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' प्रस्तुत किया गया। 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' का उद्देश्य वृक्षारोपण, जल संचयन और ऐसी अन्य प्रथाओं को बढ़ावा देकर वित्तीय लाभांश लाना है।
- भारत लम्बे समय तक निम्न कार्बन विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है और 2070 तक नेट-शून्य तक पहुँचने का लक्ष्य रखा गया है।

सुविधाकरण

ग्रामीण पर्यटन: सुविधाओं के माध्यम से सशक्तिकरण

ग्रामीण पर्यटन में अपार संभावनाएं हैं, लेकिन ग्रामीण समुदायों में अभी भी संशय है। सुविधाओं ("सुविधा") में सुधार करके, जिसे मूर्त और सूचनात्मक दोनों तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन के लिए सुविधाओं के तीन स्तर

सुविधा स्तर	विवरण
सकारात्मक सुविधाएं	* **स्वास्थ्य देखभाल:** आपातकालीन देखभाल सहित सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं। * स्वच्छता: स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन। * सुरक्षित पेयजल: स्वच्छ पेयजल तक पहुंच। * हरित ऊर्जा: सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग। * स्ट्रीट लाइटिंग: रात में सुरक्षा के लिए। * स्मार्ट सुरक्षा समाधान: रिमोट सुरक्षा के लिए तकनीकी समाधान।
सहायक सुविधाएं	* **डिजिटल सेवाएं:** मोबाइल कनेक्टिविटी और डिजिटल भुगतान। * यात्रा कनेक्टिविटी: परिवहन तक आसान पहुंच। * प्रतिबंधात्मक प्रथाओं का स्पष्टीकरण: स्थानीय रीति-रिवाजों और नियमों के बारे में पर्यटकों को शिक्षित करना। * सुविधाओं तक पहुंच: बुनियादी दुकानें और एटीएम।
मूल्यवर्धन सुविधाएं	* **डिजिटल कौशल:** डिजिटल मार्केटिंग और सोशल मीडिया का उपयोग। * आतिथ्य कौशल: पर्यटकों के साथ पेशेवर व्यवहार। * ग्राम कुटीर उद्योग: स्थानीय कला, शिल्प और व्यंजनों को बढ़ावा देना। * स्थानीय समुदाय से जुड़ना: सांस्कृतिक अनुभवों और गतिविधियों में पर्यटकों को शामिल करना।

निष्कर्ष:ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों में विकास और समृद्धि ला सकता है। सुविधाओं में सुधार करके और हितधारकों को शामिल करके, भारत ग्रामीण पर्यटन में एक वैश्विक नेता बन सकता है।

डाक विरासत : डाक विरासत को पर्यटक आकर्षणों में बदलना

परिचय

- 8-10 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के साथ, भारत एशिया प्रशांत क्षेत्र में आठवें स्थान पर है। दूसरी ओर, घरेलू पर्यटकों की संख्या प्रति वर्ष 600-700 मिलियन है।
- गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और उत्तर प्रदेश में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक है,
- घरेलू पर्यटक उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात को पसंद करते हैं।
- भारत आने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों में, 80% से अधिक पर्यटक बांग्लादेश, यूरोपीय संघ, अमेरिका और ब्रिटेन से हैं।
- भारत बांग्लादेश और ब्रिटेन के साथ एक इतिहास साझा करता है जिसका अर्थ है कि हर साल भारत आने वाले लगभग 3.5 मिलियन पर्यटक निश्चित रूप से औपनिवेशिक काल के ऐतिहासिक स्थानों को देखने में रुचि रखते होंगे।

44 विरासत इमारतों और 1939 से पहले की 350 से अधिक इमारतों के साथ, डाक विभाग एक बड़ी विरासत संपत्ति का प्रबंधन करता है। प्रत्येक विरासत भवन को एक पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है ताकि नागरिक और विदेशी न केवल उनकी सुंदरता की सराहना कर सकें बल्कि इन संरचनाओं से जुड़े अतीत के बारे में भी जान सकें।

भारत का डाक इतिहास

- भारत का डाक इतिहास दुनिया के सबसे पुराने डाक इतिहास में से एक है, जोकि मौर्यकाल से शुरू होता है।
- हालांकि, आधुनिक व्यवस्थित डाक पद्धति की नींव 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा रखी गई थी। चूंकि 19वीं और 20वीं शताब्दी में डाक और बाद में टेलीग्राफ संचार का एकमात्र साधन थे, डाकघर, डाक बंगले, मेल ट्रेनें, टिकटें, पत्र आदि हमारे इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए।
- 1913 में निर्मित मुंबई जीपीओ इंडो-सारसेनिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और बीजापुर के
- गोल गुंबज से प्रेरित है।
- 44 विरासत इमारतों और 1939 से पहले की 350 से अधिक इमारतों के साथ, डाक विभाग एक बड़ी विरासत संपत्ति का प्रबंधन करता है।
- डाक विभाग इन कई महत्वपूर्ण विरासत इमारतों को पुनर्स्थापित करने के लिए इनटेक (INTACH) और सीपीडब्ल्यूडी के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि ऐसे स्थानों को पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनाया जा सके।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1854 से पहले, डाकघर द्वारा विभिन्न प्रांतों में विविध सेवा दी जाती थी, प्रत्येक के अलग-अलग नियम और डाक शुल्क की अलग-अलग दरें थीं।

- महत्वपूर्ण कस्बों के बीच मुख्य लाइनों पर बहुत कम नियमित मेल भेजे जाते थे, और जिलों के कलेक्टर अपने स्वयं के स्थानीय डाकघरों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार थे।
- 1850 में डाक सेवाओं की स्थिति पर विचार करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया गया था, और इसके विचार-विमर्श का परिणाम 1854 का डाकघर अधिनियम था और डाकघर को महानिदेशक नामक एक ही प्रमुख के तहत एक शाही विभाग में परिवर्तित किया गया था।

भारत के ऐतिहासिक डाकघर:

शहर	डाकघर	स्थापना वर्ष	वास्तुकला शैली	विवरण
कोलकाता	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1868	विक्टोरियन	श्री ग्रानविले द्वारा डिजाइन किया गया, यह भारत का पहला जीपीओ है।
मुंबई	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1910	सरसेनिक पुनर्जागरण	श्री जेम्स बेग द्वारा डिजाइन किया गया, यह भारत का दूसरा जीपीओ है।
मद्रास	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1885	इटैलियन पुनर्जागरण	श्री चिशोल्म द्वारा डिजाइन किया गया, यह भारत का तीसरा जीपीओ है।
नागपुर	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1921	विक्टोरियन	मध्य प्रांत और बरार के तत्कालीन पोस्टमास्टर जनरल का मुख्यालय था।

दिल्ली	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1885	औपनिवेशिक	ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित दिल्ली का सबसे बड़ा डाकघर।
नई दिल्ली	जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ)	1934	आधुनिक	रॉबर्ट टोर रसेल द्वारा डिजाइन किया गया।
पणजी	प्रधान डाकघर	1893	पुर्तगाली औपनिवेशिक	पुर्तगाली पोस्ट के रूप में बनाया गया था।
शिमला	चौड़ा मैदान डाकघर	1910	नियो-ट्यूडर	हिमालयी वास्तुकला का मिश्रण।
बेंगलुरु	डाक संग्रहालय भवन	1804	औपनिवेशिक	सरकारी संग्रहालय और बाद में डाक सेवाओं द्वारा प्रशासनिक कार्यालय के रूप में उपयोग किया जाता था।
फोर्ट कोच्चि	डाकघर	1900	औपनिवेशिक	फोर्ट कोच्चि के लोगों के जीवन में विशेष महत्व रखता है।
तिरुवनंतपुरम	पीएमजी कार्यालय भवन	1933-34	आर्ट डेको	त्रावणकोर के मुख्य अभियंता का कार्यालय था।
तिरुवनंतपुरम	किला डाकघर भवन	19वीं शताब्दी	पारंपरिक	महारानी गौरी पार्वती बाई द्वारा निर्मित श्री पदम पैलेस का हिस्सा था।
ग्वालियर	लश्कर डाकघर	19वीं शताब्दी	मिश्रित	विभिन्न स्थापत्य शैलियों में निर्मित सात इमारतों में से एक।
पुणे	एचपीओ	1903	पल्लडियन	1854 में स्थापित पुणे की पहली टेलीग्राफ लाइन से जुड़ा हुआ है।
पुडुचेरी	प्रधान डाकघर	18वीं सदी	औपनिवेशिक	18वीं सदी के मध्य की इमारत।
चेन्नई	जीपीओ	1884	विक्टोरियन	रॉबर्ट फेलोस चिशोल्म द्वारा डिजाइन किया गया।
चेन्नई	फिलाटेलिक ब्यूरो	1900	आर्ट नोव्यू	दक्षिण भारत के पहले इलेक्ट्रिक थिएटरों में से एक।
लखनऊ	जीपीओ	1929-32	आर्ट डेको	एक ब्रिटिश वास्तुकार द्वारा रिंग थिएटर के रूप में डिजाइन किया गया था।

आगे का रास्ता

डाक विभाग द्वारा बहुमूल्य डाक विरासत को प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में परिवर्तित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं-

- पर्यटन प्रयोजन के लिए विरासत भवनों को खोलने के लिए एक नीति अधिसूचित करें। यह पर्यटन मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय के परामर्श से किया जा सकता है।
- अपनी विरासत इमारतों के इतिहास पर शोध और संकलन करें और ऐसी इमारतों के सामने आकर्षक साइनेज पर उनके बारे में रोचक तथ्य प्रदर्शित करवाएं।
- विरासत भवनों को उनके मूल डिजाइन के अनुसार पुनर्स्थापित करें।
- ऐसी इमारतों के मुख्य क्षेत्रों को आधिकारिक उपयोग से मुक्त करें और उन्हें पर्यटकों और गाइडों के लिए सुलभ बनाएं।
- ऐसी इमारतों के कुछ हिस्सों में स्थानीय डाक इतिहास पर संग्रहालय स्थापित करें।

हमारी समृद्ध डाक विरासत को बढ़ावा देने से न केवल हमारे कस्बों और शहरों में पर्यटक आकर्षण पैदा होगा और स्थानीय रोजगार को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि हमारी ऐतिहासिक इमारतों की बहाली और रखरखाव में भी मदद मिलेगी।

पर्यटन के माध्यम से तैयार होगा ग्रामीण सांस्कृतिक पथ

परिचय

पीढ़ियों से चली आ रही काशी और कांचीपुरम की उत्कृष्ट हथकरघा बुनाई से लेकर गाँव के चौराहों पर गूंजने वाले जीवंत लोक संगीत तक ग्रामीण सांस्कृतिक पथ के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हालांकि, वैश्वीकरण और बदलती जीवनशैली से इन परंपराओं को पर्यटन के मानचित्र पर लाने की आवश्यकता है। यह सांस्कृतिक पथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकने के साथ नई पीढ़ी को स्थानीय विरासत पर गर्व की प्रेरणा भी देते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन पथों का बहुआयामी महत्व

- ग्रामीण सांस्कृतिक पथ आगंतुकों को ग्रामीण क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को दिल से जोड़ते हैं।
- स्थानीय शिल्प, पारंपरिक कला रूपों, विरासत स्थलों और गहन सांस्कृतिक अनुभवों से लोगों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं।
- इन सांस्कृतिक पर्यटन पथ को समृद्ध और प्रामाणिक समझ देने के लिए डिजाइन किया गया है।
- आर्थिक रूप से यह नई आजीविकाएं सृजित करते हैं।

ग्रामीण भारत में उत्कृष्ट शिल्प कौशल से लेकर जीवंत प्रदर्शन कला तक, सांस्कृतिक परंपराओं की विशाल संपदा मौजूद है। इन खजानों के संरक्षण एवं संवर्धन में पर्यटन पथ की अहम भूमिका है। देश भर में मौजूद सांस्कृतिक पर्यटन मार्ग भारत को एकसूत्र में पिरोने के साथ रोज़गार, जीवन स्तर की गुणवत्ता के भी महत्वपूर्ण कारक हैं। ये रास्ते स्थानीय विरासत को सहेजने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि पर्यटन की भौतिक संरचनाओं की पहुँच को आसान बनाने के साथ उसकी सुंदरता के वर्णन की सहज और सरल व्यवस्था हो। यह सामुदायिक भागीदारी से ही संभव है। देश के अलग-अलग हिस्सों में पर्यटन केंद्रों के विकास में ग्रामीण सांस्कृतिक पथ अत्यंत प्रभावी केंद्र बनकर उभरे हैं।

एक सफल सांस्कृतिक पथ का निर्माण केवल कुछ स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर जोड़ने से कहीं अधिक होता है। इसमें निम्नलिखित शामिल है:

भौतिक और अमूर्त विरासत का साझा पर्यटन

- **स्थल:** पर्यटन पथ में भौतिक और प्रथाओं के रूप में मौजूद दोनों ही सांस्कृतिक संपत्तियां शामिल होनी चाहिए। किसी भी जगह के ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर और पारंपरिक गाँव की वास्तुकला अतीत की झलक पेश करती है। अमूर्त विरासत पीढ़ियों से चली आ रहे सांस्कृतिक अनुभूति को व्यक्त करती है।
- **प्राकृतिक परिदृश्य** जिसमें पवित्र उपवन, झरने, या कृषि पद्धतियाँ स्थानीय परंपराओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं।
- **अंतरराष्ट्रीय स्तर पर** कई सर्वश्रेष्ठ प्रथाएं देखने को मिलती हैं। इथियोपियाई रूढ़िवादी चर्च परंपरा 'चर्च वन', पूजा स्थलों के आसपास के पवित्र उपवनों का रखरखाव करती है।हमारे देश के कोने- कोने में असंख्य मंदिरों में वन देवताओं की पूजा की जाती है।भारत का ग्रामीण परिदृश्य जीवंत प्रदर्शन कलाओं से जीवंत है।
- लोक नृत्य, संगीत, नाटक और कठपुतली सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन पथ में विविधता

- सांस्कृतिकपर्यटन पथ में जीवन के विभिन्न लोकरंग समाहित होते हैं। यह किसी विशिष्ट शिल्प के इतिहास, स्थानीय त्यौहार के विकास, या लोगों और उनकी भूमि के बीच जटिल संबंध को व्यक्त करता है।
- उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में लिविंग ट्रेडिशन चंदेरी तथा बंगाल, झारखंड और ओडिशा में छाऊ नृत्य।

सम्मानजनक अन्वेषण

- ध्यान हमेशा वास्तविक आदान-प्रदान और परंपराओं के सम्मान पर होना चाहिए। आगंतुकों को इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को आकार देने वाले कौशल, विश्वास और दैनिक जीवन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए।
- सांस्कृतिक रास्ते तब फलते-फूलते हैं जब वह प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं जो वास्तव में किसी स्थान की आत्मा को दर्शाते हैं। पर्यटक स्थानीय समुदायों और उनके जीवन के तरीकों के साथ वास्तविक जुड़ाव चाहते हैं।
- सफल सांस्कृतिक पथ में स्थानीय समुदाय के साथ और उनके द्वारा तैयार कृतियों की प्रमुखता होती है। समुदाय के सदस्यों को योजना, प्रबंधन और पथ से प्राप्त लाभों में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। विभिन्न प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करने और समुदाय के लिए व्यापक लाभ सुनिश्चित करने की कुंजी पहुँच मार्ग का सुविधाजनक होना है।
- जानकारी को कई भाषाओं में उपलब्ध कराने, साइनेज उपलब्ध कराने और स्थानीय गाइडों को प्रशिक्षित करने से पर्यटन को समावेशी रूप दिया जा सकता है।
- एक सफल सांस्कृतिक पथ के मूल में स्थिरता होनी चाहिए। इसका मतलब पर्यटन को इस तरह से प्रबंधित करना है जिससे प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ समुदाय के सांस्कृतिक ताने-बाने की भी रक्षा हो सके।

पर्यटन के स्पष्ट दायरे से परे सोचना

- इसमें कम-ज्ञात आकर्षणों और स्थलों की संभावनाओं को पहचानना और उनका दोहन करना शामिल है जो पर्यटक पहल पर विचार करते समय तुरंत दिमाग में नहीं आते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण प्रकाशस्तंभ है।

- प्रकाशस्तंभ ऐतिहासिक, स्थापत्य और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। यह अक्सर ऊबड़-खाबड़ समुद्र तटों पर एकान्त प्रहरी के रूप में खड़े रहते हैं, जो लुभावने दृश्य और समुद्री इतिहास की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- हाल के वर्षों में, कई देशों ने इन संरचनाओं की पर्यटन क्षमता को पहचानना शुरू कर दिया है और लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पहल विकसित की है।
- निर्देशित पर्यटन के अलावा, कुछ प्रकाशस्तंभ रात्रि विश्राम की पेशकश करते हैं, जिससे आगंतुकों को एक गहन अनुभव और तटीय वातावरण के एकांत और सुंदरता की सराहना करने का मौका मिलता है।
- इसी तरह, भारत में, अपनी विशाल तटरेखा और समृद्ध समुद्री इतिहास के साथ, प्रकाशस्तंभ पर्यटन के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।
- तमिलनाडु में पूम्पुहार के प्राचीन बंदरगाह और वहां के लाइटहाउस, कर्नाटक में कौप लाइटहाउस और केरल में अलाप्पुझा लाइटहाउस सहित स्थानों को आकर्षक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

औद्योगिक विरासत स्थल

- पूर्व औद्योगिक स्थल, जैसे पुराने कारखाने, खदानें और गोदाम, किसी क्षेत्र के औद्योगिक इतिहास में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।
- भारत में, समृद्ध औद्योगिक विरासत वाले कई क्षेत्र हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी में रूहर क्षेत्र ने अपनी पूर्व कोयला खदानों और इस्पात संयंत्रों को सांस्कृतिक आकर्षणों में बदल दिया। इसी तरह, झारखंड में जमशेदपुर (इस्पात उद्योग) ,पश्चिम बंगाल में रानीगंज और (कोयला खनन क्षेत्र) , औद्योगिक विरासत पर्यटन पहल विकसित कर सकते हैं।

कृषि पर्यटन

कृषि पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाता है, जहां वे प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं और कृषि जीवन की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का अनुभव कर सकते हैं।

कृषि पर्यटन के उदाहरण:

प्रोवेंस, फ्रांस: लैवेंडर के खेतों के लिए प्रसिद्ध

नापा वैली, कैलिफोर्निया: अंगूर के बागों और वाइनरी के लिए प्रसिद्ध

भारत: पंजाब, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में जीवंत कृषि परिदृश्य और समृद्ध परंपराएं

भारत में कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के अवसर:

फार्म स्टे: पर्यटकों को किसानों के घरों में रहने और उनके दैनिक जीवन का अनुभव करने का अवसर प्रदान करना

कृषि पर्यटन अनुभव: खेतों में काम करना, फसलों की कटाई करना, जानवरों की देखभाल करना, आदि

फार्म-टू-टेबल डाइनिंग: ताज़ी, स्थानीय रूप से उगाई गई उपज से बने भोजन का आनंद लेना

शैक्षिक कार्यक्रम: टिकाऊ कृषि पद्धतियों, जैविक खेती और पारंपरिक कृषि विधियों के बारे में पर्यटकों को शिक्षित करना।

डार्क स्काई पर्यटन

- न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण वाले क्षेत्र तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए आदर्श हैं। डार्क स्काई रिजर्व और वेधशालाएं आगंतुकों को खगोलीय घटनाओं को देखने, खगोल विज्ञान के बारे में जानने और रात के आकाश की सुंदरता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती हैं।
- इंटरनेशनल डार्क- स्काई एसोसिएशन दुनिया भर में डार्क स्काई स्थानों को नामित करता है, जैसे कि आयरलैंड में केरी इंटरनेशनल डार्क स्काई रिजर्व।
- भारत में कई ग्रामीण क्षेत्र है जहां न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण है, जो उन्हें अंधेरे आकाश पर्यटन के लिए आदर्श बनाता है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी आदि

सामुदायिक भागीदारी से ग्रामीण पर्यटन बनेगा समावेशी

- टिकाऊ ग्रामीण पर्यटन के लिए स्थानीय समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है।
- सामुदायिक भागीदारी स्थानीय मूल्यों और जरूरतों के साथ तालमेल सुनिश्चित करती है।

नीय समुदायों को शामिल करने का महत्व:

सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान: पर्यटन स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुरूप होना चाहिए।

- **समुदाय स्वामित्व:** स्थानीय लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना और पर्यटन से होने वाले लाभों का वितरण सुनिश्चित करना।
- **आर्थिक अवसर:** रोजगार, उद्यमिता और कौशल विकास के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करना।
- **सांस्कृतिक संरक्षण:** कला, शिल्प और विरासत को संरक्षित करना और पुनर्जीवित करना।
- **पर्यावरण संरक्षण:** प्राकृतिक संसाधनों का स्थायी प्रबंधन और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करना।

निष्कर्ष

स्थायी ग्रामीण पर्यटन केवल आकर्षक दृश्यों और प्राकृतिक सुंदरता से कहीं अधिक है। यह एक व्यापक दृष्टिकोण है जो सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

स्थायी ग्रामीण पर्यटन को लागू करने में, सामुदायिक भागीदारी सर्वोपरि है, स्थानीय मूल्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना है।

जम्मू-कश्मीर पर्यटन: वृद्धि और विकास

परिचय:

- पृथ्वी पर स्वर्ग के नाम से प्रसिद्द वर्तमान जम्मू-कश्मीर एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है, जो अपनी समृद्ध संस्कृति, प्राकृतिक आकर्षण और विकासशील पहलों के साथ वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए तैयार है। पर्यटन में 155% की वृद्धि के साथ एक जम्मू-कश्मीर एक प्रमुख वैश्विक गंतव्य बन चुका है।
- होम-स्टे पर्यटन; धार्मिक पर्यटन और साहसिक पर्यटन इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर आध्यात्मिकता, प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधताओं का एक अद्वितीय मिश्रण प्रदान करता है। 2023 में कश्मीर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन ने जम्मू-कश्मीर के पर्यटन परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

होम-स्टे: एक सफल जमीनी स्तर का आंदोलन

- जम्मू-कश्मीर में होम-स्टे उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। यह आगंतुकों को आवास और प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है। होमस्टे ने पर्यटन में वृद्धि (2022 में 1.88 करोड़, 2023 में 2.11 करोड़) और रोजगार सृजन में योगदान दिया है। वे दूरदराज के क्षेत्रों में आवास और भोजन की चुनौतियों का समाधान करते हैं।

विरासत संरक्षण: लकड़ी के कॉटेज

- जम्मू-कश्मीर पर्यटन में लकड़ी के कॉटेज और होमस्टे एक बढ़ती प्रवृत्ति हैं। वे आवास और प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करते हैं। साथ ही वास्तुशिल्प विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

धार्मिक तीर्थयात्राएं: जम्मू-कश्मीर में आध्यात्मिक प्रवास

- धार्मिक तीर्थयात्राएं जम्मू-कश्मीर में पर्यटन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। श्री माता वैष्णो देवी और अमरनाथ यात्रा लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करती हैं। जम्मू-कश्मीर मंदिरों, तीर्थस्थलों और मस्जिदों की समृद्ध विरासत का घर है।
- धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। हालाँकि इस क्षेत्र में बेहतर बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है।

पर्यटन में निरंतरता एक आदर्श बदलाव:

- जम्मू-कश्मीर में पर्यटन विकास न केवल आर्थिक रूप से व्यवहार्य है बल्कि पारिस्थितिकीय और सामाजिक रूप से भी टिकाऊ है, क्योंकि यह क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक-सांस्कृतिक जिम्मेदारी के साथ इस उद्योग के विकास को संतुलित करने का प्रयास करता है।
- इसमें अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन विकल्पों को बढ़ावा देना शामिल है। इसके अतिरिक्त, क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को संरक्षित करने, पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा करने और कार्बन पदचिह्न को कम करने पर जोर दिया गया है।

सामुदायिक भागीदारी और सशक्तीकरण:

- स्थानीय समुदायों को पर्यटन संबंधी गतिविधियों में शामिल किया जा रहा है, ताकि वे सक्रिय रूप से उद्योग में भाग लें और आय अर्जित करें।
- होमस्टे न केवल पर्यटकों को अद्वितीय सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करते हैं बल्कि स्थानीय परिवारों को आय का स्रोत भी प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक संरक्षण:

- इस समय जम्मू और कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और संवर्धन के प्रयास चल रहे हैं। इसमें ऐतिहासिक स्थलों, पारंपरिक कला एवं शिल्प और स्वदेशी प्रथाओं का संरक्षण शामिल है। इस सन्दर्भ में पर्यटन उद्योग का लक्ष्य स्थानीय पहचान के संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए प्रामाणिक अनुभव प्रदान करना है।
- इसके अलावा,पर्यटकों के बीच स्थानीय रीति- रिवाजों का सम्मान करने और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने जैसे नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।

ऑफ-द-बीटन-पाथ होमस्टे: छिपे हुए खजाने का अनावरण

- होमस्टे, अपने गैर-परंपरागत स्थानों के साथ, यात्रियों के लिए लीक से हटकर गाँवों में स्थित, छिपे हुए रास्तों और अछूते परिदृश्यों के लिए प्रवेशद्वार का काम करते हैं, जिससे पर्यटकों को अनछुए क्षेत्रों में जाने का अवसर मिलता है।
- स्थानीय समुदायों के साथ यात्रियों को इस क्षेत्र की अनकही कहानियों को जानने, सांस्कृतिक टेपेस्ट्री और परंपराओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का मौका मिलता है।

साहसिक पर्यटन: हिमालय में रोमांच

- जम्मू और कश्मीर में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देना साहसिक उत्साही लोगों के लिए रोमांचकारी अनुभव प्रदान कर रहा है। ऊंचे पहाड़ों से लेकर प्राचीन नदियों तक, जम्मू-कश्मीर विभिन्न साहसिक गतिविधियों के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि प्रदान करता है, और इन पेशकशों को प्रदर्शित करने और बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं।

ट्रैकिंग ट्रेल्स:

- हिमालय के चुनौतीपूर्ण इलाके ट्रेकर्स के लिए लुभावने परिदृश्यों का पता लगाने और क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को करीब से देखने का अवसर प्रदान करते हैं। ग्रेट लेक्स ट्रेक और टार्सर मार्सर ट्रेक जैसे लोकप्रिय ट्रैकिंग स्थल दुनिया भर से साहसिक पर्यटन चाहने वालों को आकर्षित करते हैं।
- इस क्षेत्र की नदियों और झीलों का विशाल नेटवर्क जल-आधारित साहसिक गतिविधियों के लिए भी उपयुक्त है। लिद्दर नदी या जास्कर नदी के अशांत क्षेत्रों में व्हाइट-वॉटर राफ्टिंग ने लोकप्रियता हासिल की है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन डल झील कयाकिंग और कैनोइंग जैसी गतिविधियों के लिए एक शांत लेकिन साहसिक वातावरण प्रदान करती है।
- जम्मू और कश्मीर शीतकालीन खेल प्रेमियों के लिए खेल के मैदान का काम करते हैं। गुलमर्ग विशेष रूप से स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग के केंद्र के रूप में उभरा है।
- सनासर और पहलगाम जैसी जगहों पर पैराग्लाइडिंग गतिविधियाँ पर्यटकों को क्षेत्र की सुंदरता के साथ रोमांच का अनुभव लेने का अवसर प्रदान करती है।

निष्कर्ष:

- जम्मू और कश्मीर का पर्यटन इस क्षेत्र की क्षमता को रेखांकित करती है। विरासत संरक्षण, धार्मिक महत्व, सतत पर्यटन और साहसिक गतिविधियों का अभिसरण पर्यटन उद्योग में अद्वितीय वृद्धि और विकास के शिखर पर क्षेत्र की व्यापक तस्वीर पेश करता है।

- जम्मू और कश्मीर की पर्यटन यात्रा की सफलता सिर्फ संख्या में नहीं बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक संरक्षण और पारंपरिक पर्यटक अनुभवों के परिवर्तन पर स्थायी प्रभाव में मापी जाती है। पर्यटन उद्योग न केवल वर्तमान पीढ़ी को लाभान्वित करती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक और सांस्कृतिक खजाने को भी संरक्षित करती है।
- जैसे-जैसे यात्री प्रामाणिक, गहन और सतत अनुभवों की तलाश करते हैं, जम्मू और कश्मीर वैश्विक पर्यटन परिदृश्य में एक उदाहरण बनने के लिए तैयार है, जो दुनिया को अपने द्वारा पेश किए जाने वाले विविध आश्चर्यों की खोज करने के लिए आमंत्रित करता है।

ग्रामीण मेले एवं उत्सव

परिचय:

- ग्रामीण मेले और उत्सव राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि ये हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन भी करते हैं। पर्यटन के क्षेत्र में, ये उत्सव पर्यटकों को अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हुए स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- इस प्रकार ग्रामीण मेले और उत्सव पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हैं। इन उत्सवों को स्थायी और जिम्मेदार तरीके से विकसित करके, हम न केवल पर्यटकों को अविस्मरणीय अनुभव प्रदान कर सकते हैं, बल्कि स्थानीय समुदायों को भी सशक्त बना सकते हैं और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा कर सकते हैं।

UNWTO विश्व पर्यटन बैरोमीटर 2024:

- UNWTO विश्व पर्यटन रिपोर्ट के अनुसार अंतरराष्ट्रीय पर्यटन में महामारी-पूर्व स्तर का 88% तक सुधार हुआ है। और इसके 2024 के अंत तक पूरी तरह से सामान्य होने की उम्मीद है।
- वर्ष 2022 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 1731.01 मिलियन और विदेशी पर्यटकों की संख्या 8.59 मिलियन रही। पर्यटन क्षेत्र विदेशी मुद्रा आय सहित ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में, आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक बड़ा स्रोत है।

किसी गंतव्य को विकसित करने में पांच A की भूमिका:

- बिना गंतव्य के पर्यटन संभव नहीं है। किसी गंतव्य को विकसित करने और उसे बनाये रखने में पांच A महत्वपूर्ण है
    1. आकर्षण; जो पर्यटक को उस स्थान की ओर खींच कर लाता है।
    2. अभिगम्यता; यानी (परिवहन के साधन)।
    3. आवास (रहने की जगह)।
    4. सुविधाएं (गंतव्य पर सुविधाएं)।
    5. गतिविधियाँ (एक पर्यटक की विभिन्न गतिविधियाँ)।
- उपर्युक्त के अलावा 'उत्सव' पोर्टल एक डिजिटल पहल है, जहाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों को दुनिया भर में लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में प्रोत्साहित करने के लिए भारत में होने वाले उत्सव, त्यौहार और लाइव दर्शन आदि कार्यक्रम दिखाए जाते हैं ताकि पर्यटक आसानी से अपना आगामी यात्रा कार्यक्रम तैयार कर सकें।

मेलों और त्यौहारों का महत्व:

- **आर्थिक महत्व:**
  - पर्यटन प्रबंधन में गरीब-समर्थक दृष्टिकोण का लक्ष्य गरीब समुदायों को पर्यटन उद्योग से जोड़कर उनकी आजीविका में सुधार करना है। त्यौहार और मेले गरीबों के लिए रोजगार और आय के अवसर उत्पन्न करते हैं। भारत में, दीपावली, दुर्गा पूजा, गणेश पूजा, बाली यात्रा, सूरजकुंड मेला और पुष्कर मेला जैसे उत्सव गरीब कारीगरों और व्यवसायियों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व:**
  - पारंपरिक भारतीय त्यौहार केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। वे लोगों को एकजुट करते हैं, सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करते हैं और प्रकृति के साथ तालमेल स्थापित करते हैं।
  - फसल उत्सव कृषि जीवन और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। मौसम परिवर्तन से जुड़े त्यौहार प्रकृति के साथ तालमेल स्थापित करते हैं। पोंगल जैसे त्यौहार आध्यात्मिकता और आत्म-शुद्धि का प्रतीक हैं। इसी प्रकार मकर संक्रांति हिंदू कैलेंडर में शुभ शुरुआत का प्रतीक है।

त्यौहारों के माध्यम से एमआईसीई और रूट्स पर्यटन:

- त्यौहार पर्यटन को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं।
- वे MICE पर्यटन, विरासत और रूट्स पर्यटन और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- भारत में शादियाँ, विशेष रूप से आकांक्षी वर्ग के बीच, MICE कार्यक्रमों का एक लोकप्रिय रूप हैं। उत्तरायण जैसे पारंपरिक त्यौहारों को अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव जैसे पर्यटन आकर्षणों में बदला जा सकता है।
- नोस्टाल्जिया प्रवासी भारतीयों को उन जगहों पर जाने के लिए प्रेरित करता है जहां वे रहते थे। सिंधु दर्शन उत्सव लद्दाख में सिंधु नदी और सिंधु घाटी सभ्यता का उत्सव मनाता है।

त्यौहारों के माध्यम से साहसिक और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा:

- त्यौहार साहसिक और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं। वे पर्यटकों को आकर्षित करने, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को लाभान्वित करने और भारत को 365 दिनों के पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में मदद कर सकते हैं।
- साहसिक पर्यटन, जोखिम, विशेष कौशल और शारीरिक प्रयासों से जुड़ी गतिविधियों को सम्मिलित करता है, साथ ही पर्यटकों को रोमांचकारी अनुभव प्रदान करते हुए, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रकृति से जुड़ाव का अवसर भी प्रदान करता है।
- चूंकि साहसिक पर्यटन गतिविधियाँ अक्सर शहरी क्षेत्रों से दूर होती हैं, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना इस क्षेत्र के विकास के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।
- मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में आयोजित हनुवंतिया जल महोत्सव और गुजरात का प्रसिद्ध कच्छ रण उत्सव, न केवल अपनी सांस्कृतिक जीवंतता के लिए जाना जाता है, बल्कि रोमांचक साहसिक गतिविधियों की मेजबानी के लिए भी प्रसिद्ध है।

त्यौहारों के माध्यम से विरासत को पुनर्जीवित करना:

- विरासत पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत पर केंद्रित पर्यटन का एक रूप है, जो भारत जैसे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत अपनी समृद्ध संस्कृति और 42 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के लिए जाना जाता है। इसके अलावा, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, जैसे कुंभ मेला और रामायण का रामलीला प्रदर्शन, भारत को विरासत पर्यटकों के लिए एक अद्वितीय गंतव्य बनाते हैं।
- हरियाणा राज्य की संस्कृति और परंपरा को प्रदर्शित करने के लिए पिंजौर विरासत उत्सव का आयोजन किया जाता है। 3000 वर्ष या उससे अधिक पुरानी केरल की मुजिरिस विरासत परियोजना भारत की सबसे बड़ी संरक्षण परियोजनाओं में से एक है, जिसका उद्देश्य एक समृद्ध संस्कृति का संरक्षण करना है। कोच्चि मुजिरिस बिएननेल एक कला प्रदर्शनी और उत्सव है जो दक्षिण एशिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा है।
- हॉर्नबिल महोत्सव नगा विरासत की विशिष्टता और समृद्धि को संरक्षित और पुनर्जीवित करने के लिए नगालैंड में मनाया जाता है। मेदाराम जतारा, तेलंगाना एशिया का सबसे बड़ा आदिवासी मेला है और आदिवासी विरासत को प्रदर्शित करता है।

त्यौहारों के माध्यम से ग्रामीण उपज की बिक्री और पर्यटन को बढ़ावा देना:

- त्यौहार, न केवल मनोरंजन और सांस्कृतिक उत्सव का साधन हैं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उपज और संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए भी एक शक्तिशाली मंच हो सकते हैं।
- ये त्यौहार न केवल किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त करने में मदद करते हैं, बल्कि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को लाभ होता है।
- सरकारों, किसानों, पर्यटन संगठनों और स्थानीय समुदायों को मिलकर काम करना चाहिए ताकि त्यौहारों को अधिक सफल और टिकाऊ बनाया जा सके।

त्यौहारों के माध्यम से फूलों की खेती और पर्यटन को बढ़ावा देना:

- श्रीनगर जिले में स्थित इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप गार्डन, एशिया का सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन है, जो न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह फूलों की खेती और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच भी है। वर्ष 2007 में स्थापित, यह गार्डन डल झील के मनोरम दृश्यों के साथ जबरवान पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है।

त्यौहारों के माध्यम से भारतीय कला और 'प्रामाणिकता' को कायम रखना

- डीन मैककैनेल की पुस्तक "द टूरिस्ट" में व्यक्त किए गए विचारों के अनुरूप, त्यौहार भारतीय कला और संस्कृति की 'प्रामाणिकता' को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- आधुनिक समाज में, जहाँ अलगाव, सतहीपन और मोहभंग की भावनाएं आम हैं, लोग प्रामाणिक अनुभवों और अपनी जड़ों से जुड़ाव की तलाश में यात्रा करते हैं। त्यौहार, इस इच्छा को पूरा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाते हैं, जहाँ पर्यटक न केवल विभिन्न कला रूपों का अनुभव कर सकते हैं, बल्कि स्थानीय लोगों के जीवन और संस्कृति से भी जुड़ सकते हैं।

त्यौहारों के माध्यम से कल्याण और खेल पर्यटन को बढ़ावा देना:

- आधुनिक जीवनशैली की व्यस्तता और तनावपूर्ण प्रकृति के बीच, कल्याण और खेल पर्यटन, लोगों को स्वस्थ और खुश रहने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।
- त्यौहार, इन गतिविधियों को बढ़ावा देने और लोगों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में कार्य करते हैं।

निष्कर्ष:

- त्यौहार न केवल मनोरंजन और सांस्कृतिक उत्सव का साधन हैं, बल्कि वे अर्थव्यवस्थाओं को समृद्ध करने और समुदायों के जीवन में सुधार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे समग्र कल्याण और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में योगदान करते हैं, और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।
- इस प्रकार ये त्यौहार, सामाजिक-आर्थिक विकास और समग्र कल्याण के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। यदि अच्छी तरह से प्रबंधित किया जाए, तो वे समुदायों के जीवन में सुधार कर सकते हैं, अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत कर सकते हैं, और पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं।

ग्रामीण पर्यटन के विविध रंग

'इको विलेज' मालारिकल'

- शहरी जीवन की हलचल से दूर, केरल के कोट्टायम जिले के मध्य में स्थित मालारिकल गाँव, प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है। अंतहीन धान के खेतों, शांत बैकवाटर और जल कुमुदिनी (जलीय लिली) के गुलाबी रंगों से भरा यह गाँव, उन पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है जो शहरी जीवन की थकान से दूर शांति और सुंदरता का अनुभव करना चाहते हैं। जिला पर्यटन संवर्धन परिषद (डीटीपीसी), कोट्टायम, नौकायन और पर्यटन गतिविधियों को ग्रामीण पर्यटन विकल्प से जोड़ने हेतु निरंतर प्रयासरत है।

मडला, मध्य प्रदेश

- मध्य प्रदेश राज्य का यह शहर पूरे एशिया की सबसे स्वच्छ नदी कर्णावती (केन) से होकर गुजरता है। समुदाय में पर्यावरण संबंधी जागरूकता का स्तर आश्चर्यजनक है। पांडव जलप्रपात और गुफाएं, जो पन्ना राष्ट्रीय उद्यान और खजुराहो-यूनेस्को साइट के करीब हैं, मडला के करीब हैं।
- लोक संगीत और नृत्य, क्षेत्रीय उत्सव और बुंदेलखंड व्यंजन गाँव की अमूर्त विरासत के कुछ उदाहरण हैं। आवासों की दीवारों पर भित्ति चित्र क्षेत्र की कला और संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। गाँव का चरित्र अभी भी आवासों की वास्तुकला और संस्कृति के माध्यम से ग्रामीण जीवन को दर्शाते हैं। यह गाँव एक अद्वितीय पर्यटन स्थल है क्योंकि यह ग्रामीण पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन और विरासत पर्यटन सभी का अनुभव एक साथ प्रदान करता है।

आंध्र प्रदेश का सबसे ऊंचा झरना: तालाकोना

- 270 फीट की ऊंचाई से गिरता हुआ तालाकोना आंध प्रदेश का सबसे ऊंचा झरना है। झरने के आसपास के जंगलों को एक पारिस्थितिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। यह वेंकटेश्वर राष्ट्रीय उद्यान का एक हिस्सा है।
- सिकाडों की गुंजन से सजीव सेसाचलम के पहाड़ी इलाका; जो समुदाय-आधारित इकोटूरिज्म (सीबीईटी) योजना के तहत स्थापित गेस्टहाउस परिसर, एक छोटे से जल निकाय के तट पर स्थित है।

मेघालय का स्वच्छ गाँव रिवाई:

- रिवाई गाँव मेघालय राज्य की राजधानी शिलांग से लगभग 82 किमी. और मावलिननॉन्ग से लगभग 8 किमी. दूर स्थित है, जिसे एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव माना जाता है। रिवाई रोबाब टेंगा (साइट्रस मैक्सिमा) के पेड़ों से भरा एक साफ-सुथरा गाँव है, जहाँ पके फलों सकी प्रचुरता है । स्वच्छता और साफ-सफाई यहां हर तरफ देखा जा सकता है। यहां के कूड़ेदान भी बांस के होते हैं।

राधानगर समुद्र तट:

- यह एशिया के सबसे आश्चर्यजनक समुद्र तटों में से एक है। यह शानदार समुद्र तट, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के हैवलॉक द्वीप में पाया जाता है, अपने उत्कृष्ट और शांत वातावरण के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है।

पूवर अभयारण्य:

- पूवर द्वीप एकांत चाहने वालों के लिए एक अभयारण्य है। यह छोटा-सा द्वीप अरब सागर के संगम के पास बैकवॉटर और नेय्यर नदी से घिरा है। पूवर त्रिवेन्द्रम से लगभग 30 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है और यहां केवल नाव द्वारा ही पहुंचा जा सकता है।
- कोवलम बीच यहाँ से सिर्फ 12 किमी. दूर है। वहां से थोड़ी-सी पैदल दूरी आपको पारंपरिक मार्शल आर्ट के लिए प्रसिद्ध जगह पर ले जाएगी। इस क्षेत्र में केरल की अनूठी आत्मरक्षा प्रणाली कलारीपयटु को बनाए रखने की सदियों पुरानी परंपरा है।